1.SUHI2

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वीर हनुमान

प्राणनाथ वानप्रस्थी

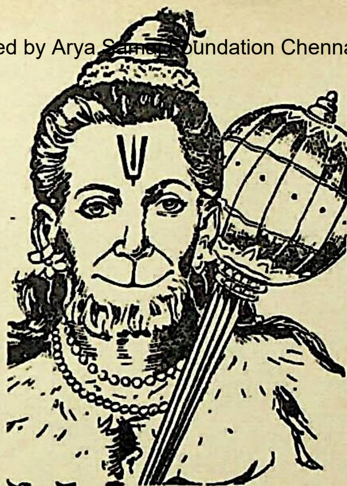
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

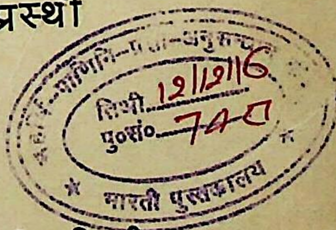
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वीर हनुमान

प्राणनाथ वानप्रस्थी





शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

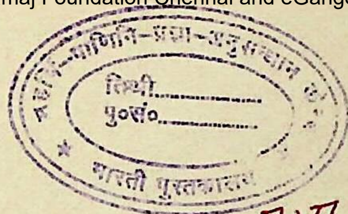
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य : चार रुपये (4.00)

संस्करण : 1985 © प्रकाशक
शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006 द्वारा प्रकाशित
VEER HANUMAN(Biography)by Pran Nath Vanprasthi

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जन्म

□□□

आज से हजारों वर्ष पहले की बात है। दक्षिण भारत में सुमेरु पर्वत के आसपास वानर-वंशीय क्षत्रियों का राज्य था। इनके राजा का नाम था बाली, जो अपने समय का महान वीर माना जाता था। रावण सरीखे वीर योद्धा को उसने छः मास तक अपने यहां बन्दी बना रखा था।

इस राज्य में लोग अधिकतर वनों में झोंपड़ियां बनाकर रहते थे। कन्द,मूल और फल इनका भोजन था। वनों में रहने के कारण वृक्षों पर उछलना, कूदना, फांदना और कई प्रकार के विचित्र-विचित्र खेल इनके जीवन का अंग बन गए थे। यहां के पुरुष एक आभूषण पहनते थे, जिसे लांगूल कहते हैं। कमर के नीचे लंगोट के ऊपर इसे पहना जाता था। पीछे की ओर पूंछ की तरह यह लटकता रहता था। वनों में रहने के कारण उन्हें हर समय जंगली पशुओं से अपनी रक्षा करनी पड़ती थी। इसलिए विपत्ति के समय ये लांगूल खोल-कर चाबुक की तरह काम भी ले सकते थे। जहां यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आभूषण इनके शरीर की शोभा था, वहां यह शस्त्र के रूप में इनका हथियार भी था।

इसी राज्य में एक पराक्रमी पुरुष केसरी रहता था। इसकी धर्मपत्नी अंजना एक आदर्श देवी थी। इनके संतान कोई नहीं थी, इसीलिए ये दोनों दु:खी रहा करते थे। एक बार धर्म-प्रचार करते हुए ऋषि नारद इनके यहां आ निकले। पति-पत्नी ने उन्हें उत्तम आसन, शुद्ध जल और फल-फूल भेंट किए। ऋषि ने प्रसन्न होकर इन्हें आशीर्वाद किया। वानरवंश-भूषण केसरी ने बड़े मधुर शब्दों में ऋषि का धन्यवाद किया और दोनों ने हाथ जोड़कर सिर झुकाकर कहा, "महात्मन्! आज आपने इस कुटिया को अपने चरणों से पवित्र किया, यह हमारा बड़ा सौभाग्य है। परन्तु महाराज! सन्तान के न होने से घर सूना-सूना लगता है। वह घर ही क्या; जिसमें नन्हे बालकों की क्रीड़ा न हो!"

ऋषि बोले, "भाई! परमपिता बड़े दयालु हैं। वायु, अग्नि, जल जिसकी आज्ञा से चलते हैं, उसी देवों के देव की सच्चे हृदय से भक्ति करो। वे अवश्य पसीजेंगे।" इतना कहकर नारदजी अपनी वीणा की मधुर तान छेड़ते हुए चल दिए।

ऋषि के वचन सिर-माथे चढ़ाकर वीर केसरी और देवी अंजना ने ब्रह्मचारी रहकर बड़े-बड़े कठिन व्रत, यज्ञ और उपवास किए। सारा-सारा दिन भगवान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

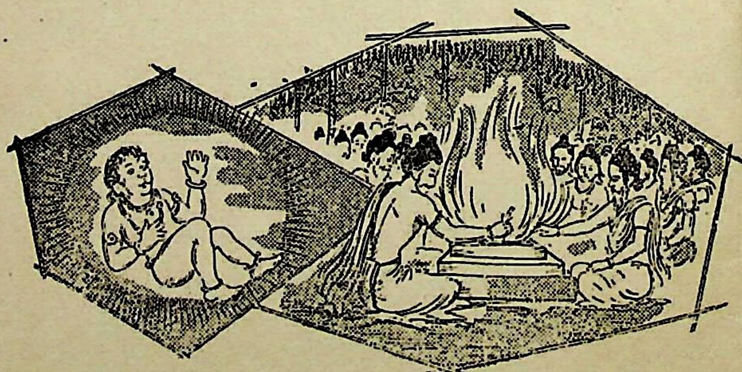


CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भक्ति में रत रहते। रात में भी थोड़ी-सी नींद लेकर जाग जाते। ओंकार और गायत्री का जप करते-करते अपनी सुध-बुध भूल जाते। बड़े मधुर स्वर में घंटों भजन और कीर्तन करते-करते कभी खिलखिलाकर हंस पड़ते, और कभी तो आंखों से इतने आंसू बह निकलते कि हिचकी बंध जाती।

सम्राटों के भी सम्राट, कण-कण में बसनेवाले भगवान तो सच्चे प्रेम के भूखे हैं। ऐसे भक्तों पर तो वे अपनी कृपाओं की वर्षा कर देते हैं। वहां से खाली हाथ कोई नहीं लौटता। वीर केसरी और देवी अंजना की तपस्या रंग लाई। चैत्र पूर्णिमा के दिन, मंगलवार को सूर्य-उदय के समय पुत्र का जन्म हुआ। बालक के जन्मते ही सोने की सलाई के साथ उसकी जिह्वा पर शहद और घी से 'ऊँ' लिखा गया और कान में प्रभु का



अंजना के एक बालक हुआ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पवित्र नाम सुनाया गया ।

बधाइयां होने लगीं । शंख, नगाड़ों और ढोलों की ध्वनि से आकाश गूंज उठा । मित्र, सम्बन्धियों और सभी जान-पहचानवालों को निमन्त्रण भेजा गया । केशर, कस्तूरी, गुग्गल, गिलोय और कई प्रकार के फलों आदि की उत्तम सामग्री बनवाई गई । गाय का घी एकत्र किया गया । केले के पत्तों और कई तरह की रंग-बिरंगी सुन्दर बेलों द्वारा यज्ञ-वेदी सजाई गई । ऋषियों और ब्राह्मणों ने मिलकर वेदमंत्रों को गुंजाते हुए बड़ा भारी यज्ञ किया । बालक का नाम हनुमान रखा गया । आए हुए सभी स्त्री-पुरुषों का भरपूर आदर हुआ । ब्राह्मणों और दीन-दुखियों को खुले हाथों दान दिया गया ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा

□□□

हनुमान की बाल-लीलाएं देख-देखकर माता-पिता फूले न समाते। बालक का मनोहर मुखड़ा देख, गांव-भर की देवियां उसे प्यार करतीं। वे उसे खिलाने के लिए अपने घर के काम-काज तक भूल जातीं। होनहार बालकों के दर्शन भी बड़े लुभावने होते हैं।

हनुमान बड़ा हो चला। कुल की रीति के अनुसार माता-पिता ने पुत्र का यज्ञोपवीत संस्कार कराया और सूर्य नामक ऋषि के पास उसे पढ़ने भेजा। वह प्रतिदिन रात को सोने से पहले और प्रातःकाल उठते ही ऋषिराज के चरण छूता था। इस महान बालक ने थोड़े समय में ही वेद, शास्त्र और दूसरे ऋषि-ग्रन्थ मथ डाले। ऋषि के चरणों में बैठकर ब्रह्मचारी हनुमान ने जहां वेद-शास्त्र पढ़े, वहां शस्त्र-विद्या का भी पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त किया। छोटी आयु में ही ब्रह्मचारी हनुमान की बुद्धि और बल को देख ऋषि चकित थे। गुरुदेव की हर आज्ञा का वे बड़ी प्रसन्नता से पालन करते। आश्रम में और भी कई ब्राह्मण और क्षत्रिय बालक शिक्षा पाते थे, परन्तु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान सरीखा धीर और वीर दूसरा न था। उनका सुन्दर और सुडौल शरीर, लम्बा कद और तेजस्वी मुख-मंडल देखकर सभी उन्हें 'बजरंगबली' नाम से पुकारने लगे। यदि किसी दुर्बल को मार पड़ती तो 'बजरंगबली' कूदकर उसकी सहायता को जा पहुंचते। निराशा और भीरुता उनसे कोसों दूर भागती थी। सूर्य ऋषि ऐसा शिष्य पाकर धन्य हो गए।

अपनी पढ़ाई पूरी कर हनुमान घर लौटे और माता-पिता की सेवा में दिन-रात एक कर दिया। जो भी शब्द माता-पिता के मुख से निकलता, बजरंगबली हनुमान मस्तक झुकाकर 'सत्यवचन' कहकर उसी समय उस आज्ञा का पालन करने में जुट जाते। जब तक उस कार्य को पूरा न कर लेते, सांस न लेते।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किष्किंधापुरी

□□□

वीर हनुमान का यश वानरराज बाली के कानों तक भी पहुंचा। उसने इस नवयुवक को बड़े आदर से राजधानी में बुलाया। उसकी वीरता को परखा गया। वानरराज इस नवयुवक का बल और बुद्धि देख-कर खिल उठा और उसने वीर हनुमान को अपना सेना-पति बना लिया।

हनुमान उन्नति करता-करता वानर देश में महान वीर माना जाने लगा और राज्य की रक्षा का सारा भार उसके कंधों पर आ पड़ा। यह ब्रह्मचर्य का ही तो प्रताप है, जिसके लिए संसार-भर की देवियां माता-समान हों। ऐसा तेजस्वी पुरुष जिस कार्य में हाथ डालेगा, सफलता उसके चरण चूमेगी।

एक बार बाली का एक बड़े वीर राक्षस से युद्ध हुआ। लड़ते-लड़ते ये दोनों बहुत दूर निकल गए। सुग्रीव भी अपने बड़े भाई की सहायता के लिए पीछे-पीछे गया। राक्षस भागकर एक कन्दरा में जा छिपा। बाली ने अपने भाई को कहा, "मैं राक्षस से लड़ने के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए कन्दरा के भीतर जा रहा हूं। तुम यहीं पर ठहरो और मेरी बारह दिन तक राह देखना। यदि मैं न लौटूं तो समझना कि मैं मारा गया और शत्रु जीत गया।"

सुग्रीव वहीं बैठ गया और बाली भीतर चला गया। एक-एक करके बारह दिन बीत गए, परन्तु बाली न लौटा। फिर भी सुग्रीव वहीं डटा रहा। एक दिन उसने देखा कि रक्त की धारा कन्दरा में से बहती हुई आ रही है। उसने समझा, हो न हो, मेरा भाई मारा गया है। यह सोच सुग्रीव ने उस कन्दरा के मुख पर बड़ा भारी पत्थर रख दिया और निराश होकर लौट आया।

जब बहुत दिन बीत गए और बाली का कोई पता न चला तो मंत्रियों ने राय करके सुग्रीव को राजा बना दिया।

प्यारे बालकों ! राक्षस उन लोगों को कहते हैं, जो साधु-महात्माओं को दुःख देते हैं, मांस खाते हैं, शराब पीते हैं, बुरे-बुरे काम करते हैं। इसलिए ऐसे लोगों से बचो। दूसरों का भला चाहने वाले, सच बोलने वाले भगवान के भक्तों की संगति में ही सदा बैठना चाहिए।

उधर कन्दरा के भीतर वानरों के राजा बाली और राक्षस का भयंकर युद्ध होता रहा। अन्त में राक्षस मारा गया और बाली जीत गया। तब बाली कन्दरा के द्वार पर पहुंचा और बड़ा भारी पत्थर देख क्रोध से भर गया। जैसे-तैसे उसने पत्थर को हटाया और किष्किन्धा-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरी लौट आया ।

सुग्रीव उसके चरणों पर आ गिरा, परन्तु उसे राजसिंहासन पर बैठा देख बाली का गुस्सा और भी बढ़ गया । वह अपने आपे में न रहा । उसने उसका मुकुट छीन लिया और धक्के मार-मारकर राज्य से निकाल बाहर किया ।

हनुमान और दूसरे मंत्रियों को यह देख बड़ा दुःख हुआ । उन्होंने बाली को कई तरह से समझाया परन्तु वह न माना । अन्त में एक दिन हनुमान ने भरे दरबार में बाली से कहा कि आपने अपने छोटे भाई के साथ जो बर्ताव किया है, वह अनुचित है । आपको चाहिए कि इस भूल का पश्चात्ताप करें और उसे बड़े प्रेम और आदर से अपने नगर में ले आएं ।

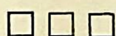
'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः'—जब किसी के बुरे दिन आते हैं तो उसकी बुद्धि बिगड़ जाती है । यही हाल बाली का हुआ । अपनी भूल माननी तो दूर, उलटे वह हनुमान को डांटने लगा ।

वीर और धीर पुरुष सदा अन्याय के विरुद्ध डट जाया करते हैं । सत्य के लिए वे बड़ी से बड़ी विपत्ति भी हंसते-हंसते झेलते हैं । हनुमान से यह सब सहन न हुआ । वह बाली की नौकरी को लात मारकर सुग्रीव के पास आ गया । उसकी देखादेखी और भी कई मंत्री बाली को छोड़कर सुग्रीव से आ मिले ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम से भेंट



सुग्रीव हनुमान और दूसरे मंत्रियों के साथ ऋष्यमूक पर्वत पर आ गया। ये लोग बाली से बदला लेने की सोचा करते, परन्तु सेना के बिना बाली को जीतना आसान न था।

एक दिन इन्होंने क्या देखा कि बहुत ऊंचे आकाश-मार्ग से एक राक्षस एक देवी को भगाकर ले जा रहा है। वह देवी 'हा राम! हा लक्ष्मण!' कहती हुई बिलख-बिलखकर रो रही है। उस देवी ने जब इस टोली को देखा तो उसने अपने कुछ वस्त्र और आभूषण फेंक दिए, जिन्हें भागकर हनुमान ने उठा लिया।

कुछ दिनों बाद एक दिन सुग्रीव ने देखा कि लम्बी-लम्बी भुजाओं वाले दो सुन्दर-सलोने राजकुमार ऋष्य-मूक पर्वत की ओर बढ़े चले आ रहे हैं। उसने शंकित मन से हनुमान को पता लगाने के लिए भेजा।

ब्राह्मण-वेश बनाकर हनुमान उनके पास जा पहुंचा और मीठे स्वर में बोला, "वीरो! आप दोनों सत्य-पराक्रमी, तपस्वी और कठोर व्रत का पालन करने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले जान पड़ते हैं। आपकी दृष्टि सिंह के समान है। दोनों हाथों में तीर और धनुष धारण किए हुए हैं। परन्तु आपका पहनावा वनवासियों जैसा है और जटाएं बढ़ी हुई हैं। आप मनुष्यों में श्रेष्ठ और परम तेजस्वी हैं। भला, इस कठिन वन में आपका आना कैसे हुआ ?"

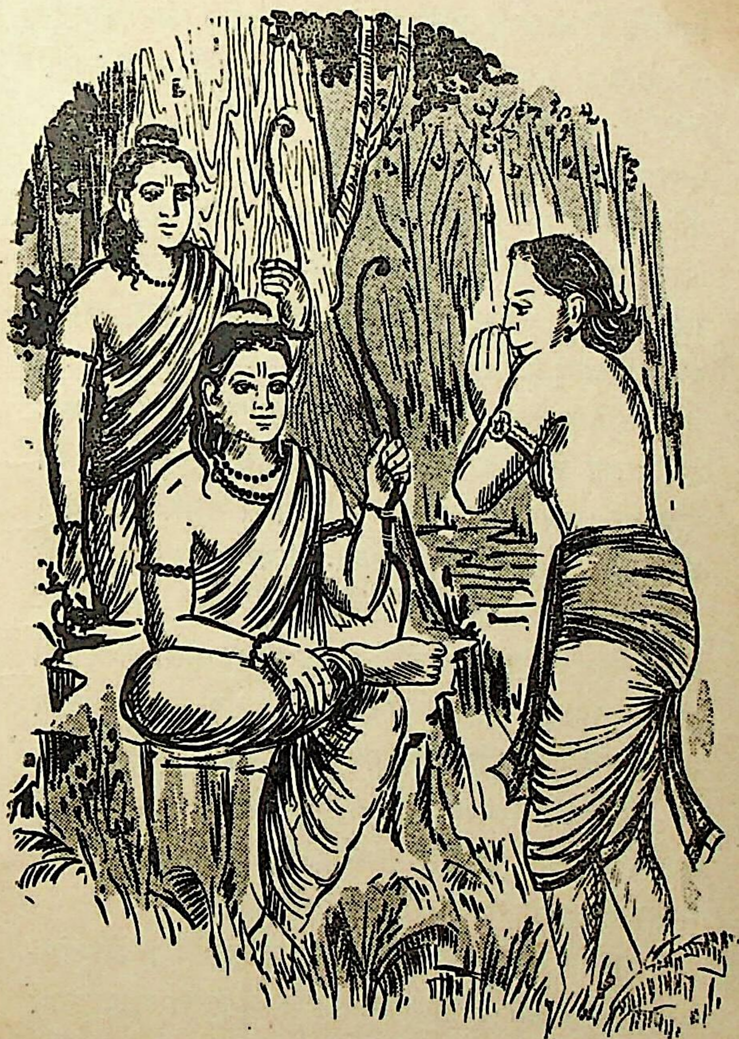
श्री रामचन्द्रजी हनुमान के मधुर वचन सुन बड़े प्रसन्न हुए और लक्ष्मण से बोले, "भ्राता ! तुम इनसे मीठी वाणी में बातचीत करो। जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली, जिसने यजुर्वेद का अभ्यास नहीं किया, जो सामवेद का विद्वान नहीं है, वह इस तरह सुन्दर भाषा में बातें नहीं कर सकता।"

बड़े भाई की आज्ञा पाकर लक्ष्मण हनुमान से बोले, "दशरथ नाम के जो धर्मात्मा राजा थे, उन्हीं के ये बड़े पुत्र हैं। इनका नाम श्रीराम और मेरा नाम लक्ष्मण है। ये पिताजी की आज्ञा का पालन करनेवाले और अपने भाइयों में सबसे अधिक गुणवान हैं। ये पिता के सत्य वचन की रक्षा के लिए राज्य छोड़, वन में आए हैं। इनके साथ इनकी पत्नी सीता भी आई थीं। एक दिन हम लोगों के न रहने पर सूने आश्रम से किसी राक्षस ने इनकी पत्नी को हर लिया। उसी की खोज में हम भटक रहे हैं।"

इस पर हनुमान ने अपने वंश और सुग्रीव की सारी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ब्राह्मण-वेश में हनुमान उन राजकुमारों के पास पहुंचे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपत्ति की कहानी सुना दी। इसे सुनकर श्रीरामचन्द्र-जी क्रोध में भरकर बोले, "ऐसे अत्याचारी बाली को मैं एक बाण में ही मार दूंगा और सुग्रीव को राजा बनाऊंगा।" हनुमान ने बड़े आदर से सुग्रीव और राम को जा मिलाया। अग्निहोत्र करके वेदमंत्रों द्वारा राम और सुग्रीव एक-दूसरे के मित्र बने। एक-दूसरे के कष्ट मिटाने और जीवन-भर कंधे से कंधा मिलाकर चलने की प्रतिज्ञाएं हुईं।

सुग्रीव ने वह वस्त्र और आभूषण दिखाए जो एक देवी द्वारा फेंके गए थे, जिसे एक राक्षस हरकर ले जा रहा था। श्रीरामचन्द्रजी ने लक्ष्मण से कहा, "भ्राता ! ज़रा इन आभूषणों और वस्त्रों को पहचानो तो, यह तो सीता देवी के दीखते हैं।" लक्ष्मण ने दोनों हाथ जोड़-कर कहा, "पूज्य भ्राताजी ! मैं तो सीता माता के चरणों के आभूषण ही पहचान सकता हूं, क्योंकि उनके चरण छूते समय मेरी दृष्टि उन पर जाती थी।"

यह है उस आदर्श का नमूना जो उस समय हमारे देश में प्रचलित था। छोटा भाई बड़े भाई की स्त्री को माता की तरह मानकर पूजता था।

सुग्रीव ने जाकर बाली को ललकारा। श्रीराम-चन्द्रजी के हाथों बाली मारा गया। उन्हें तो चौदह वर्ष तक नगर में जाना ही नहीं था, इसलिए हनुमान आदि को साथ लेकर लक्ष्मण किष्किंधापुरी में गए और सुग्रीव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को राजा बना दिया तथा बाली के पुत्र अंगद को युव-
राज बना दिया।

अब वर्षा शुरू हो गई थी। श्रीरामचन्द्रजी और
लक्ष्मण ने यह ऋतु प्रवर्षण पर्वत पर बिताई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता की खोज

□□□

वर्षा ऋतु बीत गई और आकाश से बादल छंट गए, परन्तु सुग्रीव राज्य पाकर अपना कर्त्तव्य भूल गया।

श्रीरामचन्द्रजी ने क्रोध में भरकर लक्ष्मण को किष्किंधापुरी भेजा। उनका आना सुन सुग्रीव भय से कांपने लगा। बुद्धिमान हनुमान ने उसे समझाया, "राजन् ! मित्र के किए हुए उपकार को आपने भुलाया, सो ठीक नहीं किया। सीतादेवी की खोज करने का जो समय निश्चित हुआ था, वह आपके आलस्य के कारण बीत चुका है। आपसे भूल हो गई, इसलिए आपको चाहिए कि चुपचाप लक्ष्मण के कठोर वचन सह लीजिए और श्रीरामचन्द्रजी के साथ की हुई प्रतिज्ञा का पालन कीजिए।"

लक्ष्मणजी के राजमहल के आने पर सुग्रीव ने उन्हें उत्तम आसन दिया। वह स्वयं हाथ जोड़कर उनके सामने खड़ा हो गया। लक्ष्मणजी ने क्रोध में भरकर उसे कुछ कठोर बातें कहीं।

सुग्रीव ने बड़े नम्र और मधुर वचनों में अपनी भूल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की क्षमा मांगी और उन्हें शान्त किया। वानरराज ने उसी समय चारों दिशाओं में चुने हुए वानर वीरों को सीता की खोज करने को आज्ञा दी।

सब मिलकर श्रीरामचन्द्रजी की सेवा में पहुंचे। श्रीराम ने वानर-कुल-भूषण हनुमान से कहा, "हे वीर! तुम नीति जानने वाले हो। तुम्हारा बल, बुद्धि और पराक्रम सभी प्रशंसा के योग्य हैं। यह अंगूठी निशानी के रूप में ले लो और दक्षिण दिशा में सीता देवी की खोज में जाओ।" सुग्रीव की आज्ञा से राजकुमार अंगद, जाम्बवान, नल, नील आदि कई बड़े-बड़े वानर वीर हनुमान के साथ-साथ चले।

ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वे वानर वीर सागर-तट पर जा पहुंचे। सामने ठाठें मारता हुआ सागर लहरा रहा था। उसे पार करना खिलवाड़ न था। इतने में जटायु के बड़े भाई सम्पाति से उनकी भेंट हो गई। उसने इन्हें बताया, "मैंने अपनी आंखों से देखा है कि रावण सीता को लंका-पुरी में ले गया है।"

यह वचन सुनकर सब वानर इकट्ठे होकर सोचने लगे कि सागर को कैसे पार किया जाए। सबने अपनी-अपनी शक्ति बताई। अंगद ने कहा कि मैं पार तो जा सकता हूं, पर लौट सकूंगा या नहीं, इसमें संदेह है।

अब सबकी दृष्टि हनुमान पर जा टिकी। मन्त्री जाम्बवान ने उसे उसकी वीरता की कथाएं सुनाईं। इन्हें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

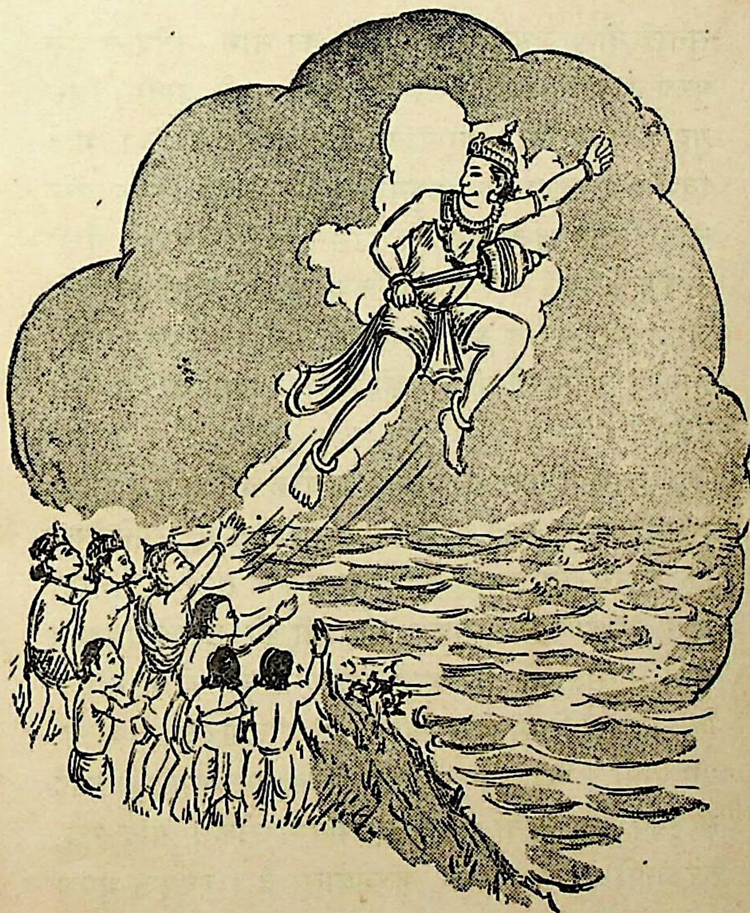
सुनकर हनुमान में उत्साह उमड़ आया और वह छाती तानकर बोला, "मैं जाऊंगा। मुझे पूरी आशा है कि सफलता मिलेगी। मेरे लौटने तक आप सब यहीं पर कन्द, मूल खाकर रहें। मैं शीघ्र ही लौटूंगा।" यह शब्द कहकर वीर श्रेष्ठ हनुमान सिंह को तरह गरजा और कूदकर ऊंचे पर्वत पर जा चढ़ा। वहां से आकाश-मार्ग से चलकर थोड़े समय में ही लंका के पास जा पहुंचा।

दिन में तो वह छिपा रहा। रात्रि के अंधेरे में वह नगर में गया। सभी बड़े-बड़े शाही भवन उसने खोज डाले। अनेकों स्त्रियों को देखा, पर सीताजी न मिलीं। इस बीच उसे शंका हुई कि मैंने पराई स्त्रियों को देखकर पाप किया है। परन्तु फिर सोचा कि मैं तो श्री-रामचन्द्रजी का दूत बनकर आया हूं। सीतादेवी तो स्त्रियों में ही मिलेंगी। उन्हें और कहां खोजा जा सकता है!—ऐसा विचार करने पर उसे शान्ति मिली। यह है हमारे बजरंगबली हनुमान के आदर्श ब्रह्मचर्य का एक नमूना! ब्रह्मचारी को कभी किसी स्त्री की ओर नहीं देखना चाहिए। उसे सदा नीची दृष्टि रखकर चलना चाहिए। चलते समय इधर-उधर नहीं झांकना चाहिए।

हनुमान ढूंढ़-ढूंढ़कर थक गया पर सीताजी का पता न चला। इधर प्रभात होने वाला था। उसने सोचा—चलो, नदी के तट पर देखें। सीतादेवी वहीं कहीं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हनुमान आकाश मार्ग से लंका के लिए चल पड़ा।

मिल जाएंगी। वहां भी खोज-खोजकर हार गया, परन्तु सीताजी का पता न चला।

इतने में उसके कानों में ओंकार की मधुर गूंज

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनाई दी। उसने सोचा—प्रभु का नाम लेनेवाले भले पुरुष होते हैं। उनसे कभी हानि नहीं होती। जिस गृह से यह आवाज़ आ रही थी, वहां रावण का भाई विभीषण रहता था। हनुमान उससे जाकर मिला और सारी बात कह सुनाई। उसने कहा, "भाई! मैं तो रावण को कई बार समझा चुका हूं कि सीतादेवी को लौटा दो, परन्तु वह सुनता ही नहीं। न जाने क्या होगा! उसने सीतादेवी को अशोक वाटिका में रखा हुआ है।"

हनुमान यहां से चलकर अशोक वाटिका में पहुंचा और वृक्ष पर चढ़कर छिप गया। इतने में उसने देखा कि राक्षसराज रावण बड़ी सज-धज के साथ वहां आया और तलवार निकालकर सीताजी को डराने-धमकाने लगा। सीताजी ने अपने और उसके बीच में एक तिनका रख लिया और सिंहनी की तरह गरजकर बोलीं, "ऐ पापी! ऐसा मालूम होता है कि इस नगरी में कोई सत्पुरुष नहीं है जो तुझे इस पाप से रोके। याद रख, तेरे पापों का घड़ा शीघ्र भरनेवाला है। रघुकुल-भूषण श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मण आएंगे। उनके तीरों की बौछार के सामने तेरा सारा अभिमान चूर-चूर हो जाएगा। उनके हाथों तेरा वंश नष्ट हो जाएगा और वे मुझे ले जाएंगे।"

सीतादेवी के इन निर्भय वचनों को सुन, एक बार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो रावण ठहाका मारकर हंसा, और बोला, "जिन वनवासियों की तुम बातें करती हो, वो तो कहीं दर-दर की ठोकरें खा रहे होंगे। तुम्हारी एक वर्ष की अवधि पूरी होने में अभी दो महीने शेष हैं। अच्छी तरह सोच-विचारकर मेरी बात मान लो, नहीं तो इस तलवार से तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।"

इतना कहकर रावण लौट गया और राक्षसियों ने सीताजी को चारों ओर से घेर लिया और लगीं भय दिखाने। सीतादेवी फूट-फूटकर रोने लगीं। थोड़ी देर में एक-एक करके राक्षसियां इधर-उधर चली गईं। इस समय सीतादेवी को अकेली पाकर हनुमान ने वृक्ष के ऊपर से श्रीरामचन्द्रजी के नाम से अंकित अंगूठी उनके सामने फेंक दी, जिसे उठाकर उन्होंने अपने हृदय से लगा लिया। उनका मुरझाया हुआ मुख खिल उठा।

इसी समय वानरश्रेष्ठ हनुमान सीतादेवी के सामने आ गया और उसनें श्रीरामचन्द्रजी की सारी जीवन-कहानी शुरू से अन्त तक कह दी, जिसे सुनकर उन्हें ढाढ़स बंधा। हनुमान ने उन्हें बताया, "हे माता ! श्री रामचन्द्रजी को अभी तक पता नहीं है कि आप यहां हैं। बाली-पुत्र राजकुमार अंगद के साथ हम लोग आपको ढूंढ़ने आए हैं। समुद्र के पार ही हम लोग पर्वतों के बीचोंबीच मार्ग भूल गए। इसी से हमारा बहुत समय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

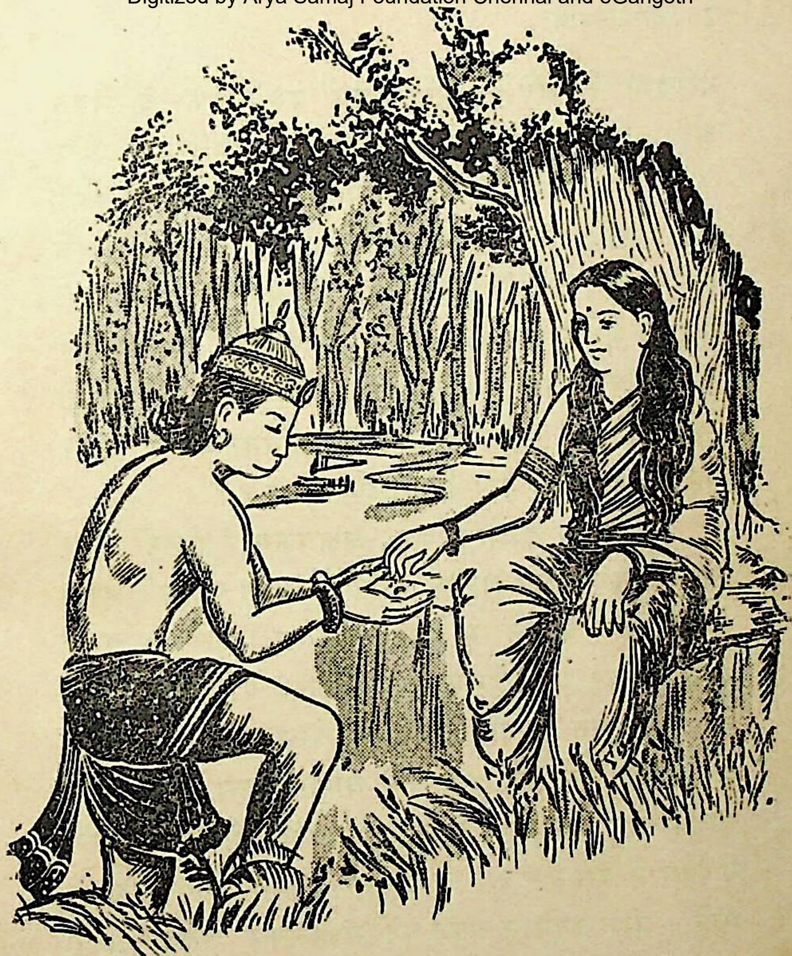
नष्ट हो गया। माता ! मेरे लौटने पर शीघ्र ही श्रीरामचन्द्रजी वानर-सेना लेकर आएंगे और रावण को मारकर आपको छुड़ाकर ले जाएंगे। माता ! अब चिन्ता छोड़िए, आपकी विपत्तियों का अन्त होने वाला है।"

विदेहकुमारी सीतादेवी ने आंसू बहाते हुए लड़खड़ाती वाणी में कहा, "हे वीर ! श्रीरामचन्द्रजी से कहना—नरश्रेष्ठ ! मेरे ऊपर कृपा कीजिए। आप जिसके नाथ हैं वह जानकी आज अनाथ-सी दिखाई देती है। आपका बल और वीरता गहरे समुद्र के समान हैं, जिसका पार पाना किसी के भी बस की बात नहीं है। अस्त्र और शस्त्र विद्या में आपके जोड़ का संसार में दूसरा नहीं है। मुझे याद है कि एक समय आपने अकेले हीं खर और दूषण के साथ आई सहस्रों की संख्या में राक्षस-सेना को कैसे मार डाला था। हे रघुकुल-भूषण ! अब आप रावण और उसकी राक्षस सेना पर वैसा क्रोध क्यों नहीं करते ? मुझ दुखिया पर दया कीजिए। आप दोनों भाई क्यों मेरा उद्धार नहीं करते ?" इन शब्दों के साथ सीतादेवो ने निशानी के रूप में अपनी चूड़ामणि वीर हनुमान के हाथ में दे दी।

वीर हनुमान सीतादेवी के चरण छूकर लगा अशोक वाटिका को उजाड़ने। देखते-देखते उसने कई पहरेदार मार डाले। तब महाबली जम्बुमाली ने उस पर सैकड़ों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सीताजी ने निशानी के रूप में अपनी चूड़ामणि हनुमान को दी।

तीर छोड़े। वीर हनुमान ने अपनी गदा से उसे भूमि पर मसल दिया। अब रावण की आज्ञा से सात मंत्री-पुत्र इकट्ठे होकर उस अकेले पर चढ़ दौड़े। वे बड़े

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलवान थे। बड़े-बड़े सुन्दर रथों पर चढ़कर वे लड़ने आए। इधर वीर बजरंगबली श्रीरामचन्द्रजी और वानरराज सुग्रीव की जय-जयकार गुंजाते हुए उन पर चढ़ दौड़ा। देखते ही देखते उसने सातों वीरों को कुचल दिया। जो बचे, वे भय से कांपते हुए राक्षसराज की सेवा में जा पहुंचे। अब रावण ने अपने पुत्र अक्षयकुमार को आज्ञा दी, "पुत्र! शीघ्र जाओ। उसे जीवित ही पकड़कर लाने का यत्न करो। मैं जानना चाहता हूं कि यह है कौन और यहां किसलिए आया है।"

पिता की आज्ञा पाकर अक्षयकुमार सैकड़ों वीर राक्षस साथ लेकर अशोक वाटिका में जा पहुंचा। अक्षय कुमार तीर चलाने में बड़ा चतुर था। उसने जाते ही तीन भयंकर बाण हनुमान के मस्तक पर मारे, जिससे वह लहूलुहान हो गया। अब वीरश्रेष्ठ हनुमान ने बादल की तरह गरजकर एक ही वार में उसका रथ तोड़ डाला और घोड़े मार डाले। अब पैदल ही अक्षयकुमार ने विष में बुझे हुए कई बाण वीर हनुमान के हृदय में मारे। वीर हनुमान अपने को संभालकर उसके ऊपर कूद पड़ा। थोड़ी देर में उसने अक्षयकुमार की हड्डियां चूर-चूर कर दीं। उसकी आंखें बाहर निकल आईं और रक्त की धारा बह निकली।

अपने पुत्र का मरना सुन राक्षसराज ने अपने बड़े पुत्र वीरश्रेष्ठ मेघनाद को लड़ने भेजा। उसे आता देख

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर हनुमान बड़ा प्रसन्न हुआ कि यह मेरे जोड़ का योद्धा है। दोनों वीर मस्त हाथियों की तरह एक-दूसरे को रगड़ने लगे। वीर हनुमान से युद्ध में पार पाना कठिन है, यह सोचकर मेघनाद ने धोखे से उसे नागफांस में बांध लिया और रावण के दरबार में ले चला।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रावण का दरबार

□□□

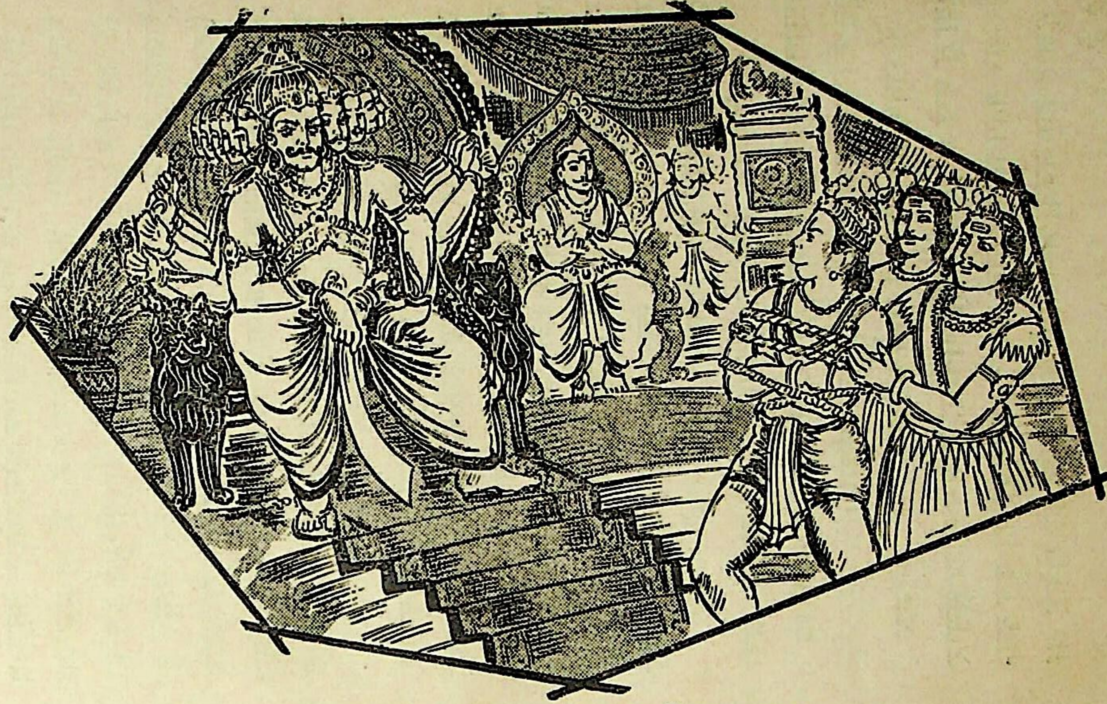
वीर हनुमान को बंधा-बंधाया ही राक्षसराज के दरबार में लाया गया। वीर हनुमान ने देखा रावण की आंखें क्रोध से लाल थीं। वह सोने का बहुमूल्य मुकुट पहने हुए था। उसने रेशमी वस्त्र पहनें हुए थे और शरीर पर लहू के रंग जैसा चन्दन शोभा पा रहा था। उसका मुख बड़ा ही डरावना था। वह रत्नों से जड़े हुए सुन्दर सिंहासन पर बैठा था।

राक्षसराज रावण ने गम्भीर शब्दों में अपने मंत्री प्रहस्त से कहा, "आप इससे पूछो तो सही, यह कहां से आया है और क्या करने आया है ? इसने अशोक वाटिका को क्यों उजाड़ा है ? बिना कारण राक्षसों को किसलिए मारा है ?"

रावण की बात सुनकर प्रहस्त ने हनुमानजी से कहा, "वीर ! तुम घबराओ मत ! ठीक-ठीक बता दो। इस समय सच्ची बात कह दो, फिर तुम छोड़ दिए जाओगे। यदि झूठ बोलोगे, तो तुम्हें जीता न छोड़ा जाएगा। तुम इस नगरी में किसलिए आए हो ?"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हनुमान को बांधकर रावण के दरबार में लाया गया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्री प्रहस्त के ऐसा कहने पर वानरश्रेष्ठ हनुमान रावण से बोला, "मेरा नाम हनुमान है। मैं वानरराज्य से आया हूं। तुम से मिलने के लिए ही मैंने वन को उजाड़ा है। मैं श्रीरामचन्द्रजी का दूत बनकर आया हूं, जिनकी धर्मपत्नी को तुम अकेले पाकर चुरा लाए हो। मैं तुम्हें समझाने आया हूं कि सीतादेवी को लौटा दो और श्रीराम से क्षमा मांग लो। इस तरह आनन्द से राज्य करते रहो।"

हनुमान के वचन सुन और अपने पुत्र अक्षयकुमार की मृत्यु को याद कर रावण क्रोध से कांपने लगा और बोला, "इस दुष्ट को पकड़कर मार डालो।" कई राक्षस एक साथ उसे पकड़ने के लिए आगे बढ़े तो वीर हनुमान गरजकर बोला, "ठहरो ! मैं तो आगे ही बंधा हुआ हूं, मुझे क्या मारोगे ? मुझे खोल दो, फिर देखो कि किस तरह तुम सबकी बुद्धि ठिकाने लगाता हूं।"

इसी समय महात्मा विभीषण ने उठकर बड़ी नम्रता से अपने बड़े भाई रावण से कहा, "महाराज ! दूत को मारना पाप है। इसे छोड़ दीजिए।"

रावण अभिमान में भरकर बोला, "ऐ हनुमान ! क्या तू मेरी शक्ति को नहीं जानता, जिससे सारा संसार थर-थर कांपता है ? तुझे उन वनवासियों का दूत बन-कर आते हुए लज्जा नहीं आई जो दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं !"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान ने गरजकर कहा, "सचमुच, आपकी वीरता के डंके तो चारों ओर बज रहे हैं। तभी तो छः महीने तक वानरराज बाली की जेल में पड़े रहे थे। फिर क्षमा मांगने पर कहीं छुटकारा मिला। अपने अब के कारनामे भी सुन लो। साधु का वेश बनाकर— साधुओं के नाम को कलंक लगाकर सीतादेवी को आश्रम में अकेला पाकर चुरा लाए हो। यदि साहस होता तो श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी के सामने आते। फिर पता लगता तुम्हारे बल और शूरवीरता का! डींगें मारना तो कायरों का काम होता है!"

हनुमान के इन तीखे शब्दों ने जलते पर तेल का काम किया। राक्षसराज ने आज्ञा दी, "इसके प्रिय आभूषण लांगूल को जला दो और इस नगर की गली-गली में घुमाओ।"

फिर क्या था, मिट्टी का तेल डालकर उसके लांगूल को आग लगा दी गई। फिर उसे नगर के एक-एक मार्ग और गली-कूचे में घुमाया गया। साथ-साथ डौंडी पीटते हुए सैनिक लोगों को बता रहे थे कि इसने क्या-क्या अपराध किए हैं। इस बीच वीर हनुमान ने बड़े ध्यान से नगर के एक-एक भाग को देखा और उसका चित्र अपने हृदय में बना लिया।

इसी बीच वीर हनुमान ने एक बार ही सारा बल लगाकर अपने बन्धन तोड़ डाले और कूदकर एक ऊंचे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवन पर जा चढ़ा। किसी भी राक्षस का साहस नहीं हुआ कि उसके पीछे जा सके। हनुमान के लिए उछलना-कूदना तो खेल था ही, उसने अपने जलते लांगूल से नगर के एक बड़े भाग में आग लगा दी। प्रभु के खेल, उस समय वायु इतने वेग से चली कि शीघ्र ही चारों ओर आग ही आग फैल गई। नगर में बड़े-बड़े भवन जलकर राख हो गए।

अन्त में हनुमान ने समुद्र में छलांग लगाकर अपने लांगूल की आग को बुझाया। तत्पश्चात् वह सीतादेवी के पास लौट आया। हनुमान को जाने के लिए तैयार देख सीताजी ने कहा, "वीर! यदि एक दिन और रुक जाओ तो क्या ही अच्छा हो! तुम्हारे रहने से मेरा शोक कम हुआ है।"

इस पर वीरश्रेष्ठ हनुमान ने कहा, "हे माता! मैं जितनी देर यहां रुकूंगा, उतनी ही श्रीरामचन्द्रजी के आने में देर लगेगी। आप प्रसन्न होकर मुझे जाने की आज्ञा दीजिए।" श्रीरामचन्द्रजी से मिलने की आशा से सीतादेवी के प्रसन्नता से आंसू छलक उठे। वीर हनुमान ने उनके चरण छूकर उनसे विदा ली।

थोड़े समय में ही वीर हनुमान आकाश-मार्ग से होकर समुद्र पार करके अपने साथियों से आ मिला। वह दल शीघ्र ही वानरराज सुग्रीव की सेवा में जा पहुंचा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये सब मिलकर श्रीरामचन्द्रजी के पास प्रवर्षण पर्वत पर जा पहुंचे। मन्त्री जाम्बवान ने सीतादेवी की निशानी चूड़ामणि उनके हाथों में देते हुए सारी घटना कह सुनाई, जिसे सुनकर श्रीरामचन्द्रजी हनुमान से गले लगकर मिले और भरे कंठ से बोले, "भाई ! मैं तुम्हारा उपकार कैसे चुका सकता हूं !" हनुमान उनके चरणों में गिरकर बोला, "महाराज मैं तो आपका सेवक हूं। मेरा धर्म तो स्वामी की आज्ञा का पालन करना है।"

श्रीरामचन्द्रजी सीता के दुःखों का विचार करके सिहर उठे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान की वीरता



वानरराज सुग्रीव की आज्ञा से सेना ने कूच कर दिया। यह सेना पड़ाव पर पड़ाव डालती हुई सागर के तट पर पहुंच गई। यहीं पर रावण का छोटा भाई महात्मा विभीषण भी इनके साथ आ मिला। नल और नील नामक इंजीनियरों ने थोड़े समय में ही सागर पर पुल बांध दिया। आज जबकि विज्ञान बहुत उन्नति पर है फिर भी सागर पर पुल कोई नहीं बांध सका। इससे मालूम होता है कि श्रीरामचन्द्रजी के समय में विज्ञान आज से अधिक उन्नति पर था।

वानर सेना के असंख्य वीर देखते ही देखते पुल पर से होकर लंकापुरी के पास पहुंच गए। इस बीच वानर-सेना के जासूस अनल, पनस, सम्पाति और प्रमति ने लंका नगरी की तैयारी के रत्ती-रत्ती समाचार का पता लगा लिया। अगले दिन प्रातःकाल ही श्रीरामचन्द्र-जी और सुग्रीव की आज्ञा से वानर वीर लंका के दुर्ग पर टूट पड़े। वीर हनुमान पश्चिमी द्वार पर मेघनाद से जा भिड़ा। बजरंगबली ने एक भयानक शक्ति मार-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वीर हनुमान मेघनाथ से जा भिड़ा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर मेघनाद का रथ तोड़ डाला, सारथी को मार गिराया और उसे भी व्याकुल कर दिया। अब क्या था, वीर हनुमान ने ललकार-ललकारकर राक्षस वीरों को मारना शुरू किया। इसी तरह कई दिन तक भयंकर युद्ध होता रहा। राक्षसों के साथ युद्ध करते समय वीर हनुमान ने बड़े-बड़े पराक्रम दिखलाए। इस वीर ने अकेले ही कई बार रावण और मेघनाद को नाकों चने चबवा दिए थे। कई प्रसिद्ध राक्षस योद्धा वीर हनुमान के हाथों कुचल दिए गए जिनके नाम हैं—धूम्राक्ष, अकम्पन, देवान्तक आदि।

वीर मेघनाद से युद्ध करते समय एक दिन लक्ष्मण जी को बड़ी भयंकर शक्ति लगी, जिससे उनका शरीर लहूलुहान हो गया और वह मूर्छित हो गए। वानरसेना के वैद्य सुषेण ने उनकी नाड़ी देखी और कहा, "यदि प्रातःकाल होने से पहले-पहले चार बूटियां मिल सकें, तभी ये बच सकते हैं। ये बूटियां पर्वत परही मिलेंगी।"

बूटियों की पहचान पूछकर हनुमानजी शीघ्र ही दौड़ पड़े। वे थोड़े समय में ही मार्ग को तय कर गए और पर्वत पर जा पहुंचे। वहां उनसे मिलती-जुलती कई और बूटियां भी थीं। हनुमानजी भ्रम में पड़ गए। उन्होंने समय को न खोकर सभी मिली-जुलती बूटियां उखाड़ लीं और वापस लौट पड़े।

प्रभात होने से पहले-पहले ही वीर हनुमान अपने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध शिविर में आ पहुंचे। सुषेण वैद्य ने इन बूटियों को पीसकर औषध बनाई और लक्ष्मणजी को सुंघाई। सूंघते ही उनकी पीड़ा दूर हो गई और वह स्वस्थ हो गए। यह देखकर सभी प्रसन्न हुए।

दूसरी बार युद्धभूमि में क्रोध में भरकर वीर लक्ष्मण ने मेघनाद को ललकारा। वीरतापूर्वक युद्ध करते हुए उस वीर ने मेघनाद का वध कर दिया। मेघनाद की धर्मपत्नी सुलोचना पतिव्रता देवी थी। वह अपने पति के साथ सती होना चाहती थी। उसकी सास मन्दोदरी ने कहा, "पुत्री ! तुम निर्भय होकर धर्म की मर्यादा का पालन करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी के शिविर में चली जाओ और अपने पति का सिर मांग लाओ।"

सास को आज्ञा पाकर वह देवी शत्रु के शिविर में गई। किसी ने उसकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा। वीर लक्ष्मण को सामने पाकर वह बोली, "भैया ! मेरे पति को मारने की शक्ति संसार में किसी में भी नहीं थी; परन्तु तुमने जो चौदह वर्ष तक निरन्तर रातों जागकर अपने भ्राता और सीतादेवी की सेवा की है और कठोर ब्रह्मचर्य का पालन किया है, उसी तप के बल पर आज तुम मेरे स्वामी को मार सके हो। अच्छा, जो हुआ सो हुआ। मेरे नाथ ने वीरगति पाई है। मुझे उनका सिर दे दो।" इस पर देवी सुलोचना की इच्छा पूर्ण कर दी गई और वह अपने पति का सिर लेकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंकापुरी में लौट आई और सती हो गई ।

अपने संबंधियों, पुत्रों, सेनापतियों और बहुत सारी सेना को मरवाकर राक्षसराज रावण भी श्रीरामचन्द्र जी के हाथों युद्धभूमि में मारा गया ।

आश्चर्य तो इस बात का है कि मेघनाद, कुम्भकरण और रावण सरीखे बड़े-बड़े योद्धा युद्ध में मारे गए, परन्तु धर्मयुद्ध लड़नेवाले वानर सेनापतियों में से एक का भी बाल बांका न हुआ। मेरे देश के होनहार सपूतो ! याद रखो, संसार में सदा सत्य पर चलनेवालों की जय होती है, चाहे वे कितने ही निर्बल क्यों न हों ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरत से भेंट



विभीषण ने रोते-धोते अपने भ्राता रावण का अग्नि-संस्कार किया। श्रीरामचन्द्रजी को तो नगर में जाना ही नहीं था। लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान आदि ने लंकापुरी में जाकर विभीषण का राजतिलक कर दिया।

वनवास के चौदह वर्ष पूरे होने में एक दिन शेष रह गया था। श्री रामचन्द्रजी को इस दिन के अंत तक अयोध्यापुरी में लौटना था, क्योंकि उनके छोटे भाई भरत चौदह वर्ष से अयोध्या से बाहर नन्दिग्राम में रहकर तपस्वी का जोवन बिता रहे थे। उनकी प्रतिज्ञा थो कि यदि श्रीरामचन्द्रजी चौदह वर्ष के समाप्त होने पर न लौटे तो मैं प्राण त्याग दूंगा। इस आदर्श भाई के तप और त्याग की गाथाएं आज भी हम गा-गाकर थकते नहीं। वह भूमि के नीचे गढ़ा खोदकर रहते थे। वे वनवासियों जैसे वस्त्र पहनते थे और कन्दमूल खाते थे। उन्होंने बड़ी-बड़ी जटाएं बढ़ाई हुई थीं। इस पर भी राज्य शासन का सारा कार्य-भार वह स्वयं संभालते थे।

राक्षसराज विभीषण ने पुष्पक विमान ला खड़ा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। श्रीरामचन्द्रजी को जाने के लिए तैयार देख वानर वीरों ने हाथ जोड़कर उनसे कहा, "महाराज ! हम भी आपकी जन्मभूमि देखना चाहते हैं। आपका राजतिलक देखने की मन में बड़ी लालसा है। हमें भी साथ ले चलिए।"

श्रीरामचन्द्रजी उनका प्रेम देखकर बड़े प्रसन्न हुए। श्रीरामचन्द्र, सीता, लक्ष्मण, विभीषण, सुग्रीव, अंगद, हनुमान और अन्य सभी वानर सेनापतियों को साथ ले पुष्पक विमान पर चढ़कर अपने देश को चल पड़े। मार्ग में उन्होंने सीतादेवी को किष्किधापुरी आदि सभी स्थान दिखाए।

जब विमान भरद्वाज ऋषि के आश्रम पर पहुंचा तो सभी लोग उतर पड़े। श्रीरामचन्द्रजी ने मुनि के चरण छूकर प्रणाम किया और पूछा, "भगवन् ! क्या आपने अयोध्यापुरी के बारे में सुना है ? वहां सभी लोग कुशल से तो हैं न ? भरत अपना कर्त्तव्य पालन करते हैं न ? मेरी माताएं तो अभी जीवित हैं न ?"

मुनि भरद्वाज ने प्रसन्न होकर कहा, "भरत आपकी आज्ञा के अधीन है। वह आपकी पादुकाएं आगे रखकर आपकी राह देख रहा है। मैं आपको देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ हूं। अयोध्या नगरी में सब प्रकार से कुशल है।"

फिर रघुकुल-भूषण श्रीराम ने हनुमान से कहा, "तुम शीघ्र ही अयोध्या में जाकर भरत से मिलो और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्रीराम, लक्ष्मण, सीता आदि पुष्पक विमान पर चढ़कर स्वदेश को चल पड़े।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें हमारे लौटने का समाचार दो। जो-जो घटनाएं हमारे साथ बीती हैं वे सब उन्हें सुनाना। वहां की सब बातों का पता लगाना। भरत यदि स्वयं राज्य चाहने लगे हों, तो प्रसन्नता से राज्य-शासन संभालें। तुम अच्छी तरह से भरतजी की दृष्टि और बातचीत से उनके विचारों को समझने का यत्न करना। इसलिए अब हम आगे न बढ़ें। तुम शीघ्र ही पता लगाकर लौट आओ।"

वीर हनुमान भी श्रीराम की आज्ञा पाकर बड़ी तेज़ी से अयोध्या की ओर चल पड़ा। वह शृंगवेरपुर पहुंचा और गुह से मिला। शीघ्र ही वह यहां से चल-कर नन्दिग्राम के पास फलों से लदे हुए वृक्षों के पास पहुंचा। यह स्थान अयोध्या से एक कोस की दूरी पर है। वहां पहुंचते ही वह भरत जी से मिला। उसने देखा कि वे बड़े दुर्बल हो रहे हैं, परन्तु उनका मुखमंडल तेज से चमक रहा है। ऋषि मालूम हो रहे हैं, और मंत्रियों और सेनापतियों से घिरे बैठे हैं।

अंजना के सुपुत्र वीर हनुमान ने उनसे हाथ जोड़-कर कहा, "महात्मा! आप जिन रामचन्द्रजी के लिए चिन्ता करते हैं, वे शीघ्र ही आपके पास आ रहे हैं। मैं यह प्रिय समाचार सुनाने आया हूं। आप शोक को दूर कीजिए। सीतादेवी, लक्ष्मण और अपने महाबली मित्रों के साथ श्रीरामचन्द्रजी आ रहे हैं। उन्होंने रावण जैसे प्रबल राक्षस को मार दिया है।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान के ऐसा कहने पर भरतजी प्रसन्नता से भर गए। वे अपने आपको संभाल न सके और मूर्छित होकर गिर पड़े। होश में आने पर उन्होंने हनुमानजी को हृदय से लगा लिया और आंसुओं से मुंह भिगोते हुए बोले, "भाई! तुम कौन हो, जो कृपा करके यहां आए हो? आज वर्षों बाद मैं आनन्द देनेवाला श्रीरामचन्द्रजी का नाम सुन रहा हूं। जो-जो उनके साथ घटनाएं घटी हैं, वे मुझे ठीक-ठीक बताओ।"

वीर हनुमान ने मधुर वचनों में सारी घटनाएं कह सुनाईं, जिन्हें सुनकर भरतजी बहुत प्रसन्न हुए और बोले, "आज मेरा मनोरथ पूरा हुआ।" फिर उन्होंने अपने भाई शत्रुघ्न को कहा, "सारे नगर को सुगन्धित पुष्पों से सजाओ। गाजे-बाजे के साथ सारे नगर में शुभ घोषणा कर दो। ब्राह्मणों, क्षत्रियों और सभी नगर-वासियों से कहो कि श्रीरामचन्द्रजी का मुखमंडल देखने के लिए नगर से बाहर चलें।"

इस बीच हनुमानजी भरत से आज्ञा लेकर लौट गए। थोड़ी देर में वे भरद्वाज ऋषि के आश्रम पर जा पहुंचे। उन्होंने जो-जो देखा था, वह सब कुछ श्रीराम-चन्द्रजी को बता दिया।

अब सब पुष्पक विमान पर चढ़कर अयोध्या नगरी के बाहर जा उतरे। यहां पर सभी नगरवासी—बालक, वृद्ध, स्त्री-पुरुष उन्हें लेने उमड़ पड़े थे। भरतजी ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे बढ़कर पादुकाएं भ्राता राम के चरणों में पहना दीं और पांवों में गिर पड़े। श्री रामचन्द्रजी अयोध्या पधारे। दूसरे दिन गुरु वसिष्ठ की आज्ञा से श्रीरामचन्द्र-जी को राजतिलक कर दिया गया।

श्रीरामचन्द्रजी ने विभीषण, सुग्रीव, अंगद, हनुमान और सभी वानर वीरों को रहने के लिए बड़े-बड़े ऊंचे महल दिए।

ये सब लोग बहुत समय तक अयोध्या नगरी में रहे। श्रीरामचन्द्रजी ने अपने हाथों से उन सबको बहु-मूल्य आभूषण और वस्त्र पहनाए। वीर हनुमान को सीतादेवी ने रत्नों से जड़ी माला अपने हाथों से भेंट की।

इसके बाद श्रीरामचन्द्रजी की आज्ञा से ये सभी वीर अपने-अपने देशों को लौट गए। वीर हनुमान भी सुमेरु पर्वतीय क्षेत्र में अपने माता-पिता की सेवा में लौट आए।

इस महावीर हनुमान के जीवन की आगे की घट-नाओं का ठीक-ठीक पता नहीं लगा, इसलिए उसके जीवन-चरित्र को यहीं समाप्त किया जाता है।

●●●

मुद्रक : शान प्रिंटर्स, दिल्ली-32 5842

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटे बच्चों के लिए बड़े टाइप में मनोरंजक, ज्ञानवर्धक पुस्तकें

बड़े आकार में सचित्र लोककथाएं

◦ जापान की लोककथाएं ◦ अफ्रीका की लोककथाएं ◦ पड़ोसी देशों की लोककथाएं ◦ लोककथाएं उत्तर पूर्वांचल की ◦ असम की लोककथाएं ◦ बंगाल की लोककथाएं ◦ पंजाब की लोककथाएं ◦ उत्तर प्रदेश की लोककथाएं ◦ हिमाचल की लोककथाएं ◦ गुजरात की लोककथाएं ◦ बिहार की लोककथाएं ◦ राजस्थान की लोककथाएं ◦ महाराष्ट्र की लोककथाएं ◦ केरल की लोककथाएं ◦ मध्यप्रदेश की लोककथाएं ◦ हरियाणा की लोककथाएं ◦ मारीशस की लोककथाएं ◦ रूस की लोककथाएं ◦ चेकोस्लोवाकिया की लोककथाएं ◦ बुल्गारिया की लोककथाएं ◦ वियतनाम की लोककथाएं ◦ तिब्बत की लोककथाएं (4.00) ◦ बर्मा की लोककथाएं (8.00)

मूल्य 6.00

बहुरंगी बालोपयोगी कविताएं

◦ बंदर बांट 5.00 ◦ नीली चिड़िया 5.00 ◦ जन्मदिन की भेंट 5.00 ◦ सुनो कहानी 6.00 ◦ अन्धेर नगरी 6.00 ◦ हुआ सबेरा उठो-उठो 5.00 ◦ हम बालवीर 3.00 ◦ आज़ादी के गीत 4.00 ◦ निंदिया आ जा 5.00 ◦ देश हमारा 6.00 ◦ विजय गीत 5.00 ◦ अगर-मगर 5.00 ◦ फुलवारी 5.00 ◦ चाचा नेहरू 4.00 ◦ आओ करें सवारी 4.00 ◦ अपना देश 6.00 ◦ फूल खिले हैं डाली-डाली 4.00 ◦ हमारे पक्षी 5.00 ◦ खेलें कूदें नाचें गाएं 4.00 ◦ मेरी गुड़िया कुछ तो बोल 4.00 ◦ कहावतों के गीत 6.00

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'भारत दर्शन' पुस्तकमाला, सचित्र

०मध्य-प्रदेश 6.00 ०मणिपुर : त्रिपुरा (यन्त्रस्थ) ०भारत के द्वीप (यन्त्रस्थ) ०तमिलनाडु 6.00 ०कर्नाटक 5.00 ०बंगाल 6.00 ०कश्मीर 6.00 ०राजस्थान 6.00 ०पंजाब 6.00 (यन्त्रस्थ) ०मेघालय (यन्त्रस्थ) ०असम (यन्त्रस्थ) ०हिमालय-प्रदेश 6.00 ०आंध्र प्रदेश 6.00 ०हरियाणा 6.00

'देश और निवासी' पुस्तकमाला, सचित्र

०अफ्रीका 5.00 ०इण्डोनेशिया 5.00 ०मारिशस 6.00 ०मिस्र 5.00 ०भूटान 5.00 ०रूस 5.00 ०अमेरिका (यन्त्रस्थ) ०ब्रिटेन (यन्त्रस्थ) ०जापान (यन्त्रस्थ) ०श्रीलंका 5.00 ०नेपाल 5.00 ०पाकिस्तान 6.00 ०फ्रांस (यन्त्रस्थ) ०कनाडा 5.00 ०बांग्ला देश 5.00 ०फीजी 7.00

राजपाल एण्ड सन्ज़

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल प्रेरणाप्रद जीवनियां

पुस्तक	मूल्य
मेरा बचपन	6.00
झांसी की रानी	4.00
रवीन्द्रनाथ टैगोर	4.00
लाला लाजपतराय	4.00
सरदार पटेल	3.00
डॉ० राजेन्द्रप्रसाद	3.00
विनोबा भावे	3.00
जवाहरलाल नेहरू	3.00
महात्मा गांधी	4.00
चन्द्रशेखर आजाद	4.00
श्यामाप्रसाद मुखर्जी	3.00
गुरु नानकदेव	3.00
सुभाषचन्द्र बोस	3.00
शिवाजी	3.00
महाराणा प्रताप	3.00
चाणक्य	4.00
लोकमान्य तिलक	4.00
श्रीकृष्ण	4.00
स्वामी विवेकानन्द	4.00
गणेशशंकर 'विद्यार्थी'	4.00
गोस्वामी तुलसीदास	4.00
हमारे राष्ट्रनिर्माता	5.00
मीराबाई	4.00
गुरु तेगबहादुर	4.00
ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	3.00
सरदार भगतसिंह	4.00
स्वामी रामतीर्थ	4.00
गुरु गोविन्दसिंह	4.00
सदाचारी बच्चे	3.00
महापुरुषों का बचपन	4.00
वीर पुत्रियां	3.00
लालबहादुर शास्त्री	3.00
आदर्श बालक	3.00
आदर्श देवियां	3.00
सच्ची देवियां	3.00
इन्दिरा गांधी	6.00
भारत के महान ऋषि	3.00
अच्छे बच्चे	3.00
गौतम बुद्ध	3.00
सम्राट् अशोक	3.00
वीर हनुमान	4.00
हमारे स्वामी	4.00
श्री अरविन्द	3.00
वीर सावरकर	3.00
महर्षि वाल्मीकि	4.00
महाकवि कालिदास	4.00
साहसी बालक	4.00

शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.